



International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476

IJHS 2020; 6(2): 455-457

© 2020 IJHS

www.homesciencejournal.com

Received: 22-03-2020

Accepted: 24-04-2020

नीरज सिंहशोध छात्रा गृह विज्ञान,
रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय,
भोपाल, भारत**नीलमा कुँवर**प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, ईसीएम,
गृह विज्ञान महाविद्यालय,
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश,
भारत

कार्यकारी माताओं की भूमिका के तनाव का किशोर बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाला प्रभाव

नीरज सिंह एवं नीलमा कुँवर

सारांश

समायोजन एक सहयोगी सामाजिक प्रक्रिया है। समायोजन समाज में व्यक्ति या समूह को जोड़ने वाली प्रक्रिया है। सह संघर्ष से सहयोग की ओर बढ़ने का प्रथम चरण है। जब भी दो विरोधी पक्ष प्रतिस्पर्धा या संघर्ष समाप्त करके सहयोग करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम वे एक दूसरे से समायोजन स्थापित करते हैं। किशोरावस्था में किशोर समायोजन करना सर्वप्रथम अपने भाई-बहनों के साथ करते हैं। यही समायोजन आगे चलकर समाज के समायोजन के लिए उन्हें प्रेरित करता है जो वह अपने माता-पिता से सीखता है।

कुटुम्बशब्द: भूमिका, तनाव, समायोजन

प्रस्तावना

विद्यालय में तथा विद्यालय से बाहर बालक को परिवार तथा पास-पड़ोस के व्यक्तियों से भी समायोजन करना पड़ता है। इस प्रकार प्रत्येक किशोर के मन में विशिष्ट व्यक्ति बनने की चाहत होती है, जिसका शरीर स्वस्थ हो, विकसित होती हुई बौद्धिक योग्यतायें हों, पर्याप्त मात्रा में संवेगात्मक संतुलन हो, जिससे यह समाज के अधिक काम आ सकें, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक व्यक्ति दूसरे के प्रति अपनी विचारधारा बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज की स्वीकृति तथा पहचान चाहता है। समाज के जो अपने मूल्य, नैतिक नियम व मापदण्ड हैं, वह उन्हीं के अनुकूल काम तथा व्यवहार करता है ताकि वह समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ समायोजन सीमित कर सके। सामाजिक समायोजन में व्यक्ति सामाजिक रूप में स्वीकृत साधनों द्वारा सामाजिक आवश्यकताओं तथा चुनौतियों का सामना करता है।

उद्देश्य

- किशोर बालक/बालिकाओं के व्यक्तित्व पर कार्यकारी माताओं की भूमिका में तनाव के प्रभाव का अध्ययन करना।
- किशोर बालक/बालिकाओं के सामाजिक समायोजन पर कार्यकारी माताओं की भूमिका में तनाव के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के अयोध्या (फैजाबाद) जिला में किया गया है। इसमें अयोध्या जिले के दो राजकीय इण्टर कालेज में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं को लिया गया है। राजकीय इण्टर कालेज से 150 छात्र तथा राजकीय बालिका इण्टर कालेज से 150 छात्राओं का चयन किया गया है जिनकी आयु 14-19 वर्ष है। इसमें चर और अचर का प्रयोग किया गया है। कार्यकारी माताओं का तनाव मापने के लिए डा0 एम0 के0 सिंह द्वारा विकसित तनाव मापनी तथा समायोजन मापने के लिए डा0 रागिनी दुबे द्वारा विकसित स्केल लगाया गया है। सांख्यिकीय उपकरण जए गए उमंद आदि का उपयोग किया गया है।

परिणाम

सारिणी-1 बालक-बालिकाओं की माताओं के तनाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

श्रेणी	संख्या	माध्य	मानक विचलन
बालक	100	41.18	13.54
बालिका	200	39.84	16.93

Corresponding Author:**नीरज सिंह**शोध छात्रा गृह विज्ञान,
रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय,
भोपाल, भारत

प्रसरण विश्लेषण तालिका

चर	प्रसरण श्रोत	वर्गों का योग	स्वातंत्र्य कोटी	माध्य वर्ग योग	'एफ' का मान	सार्थकता स्तर
माताओं का प्रतिबल	न्यादर्थों के 'अन्तर्गत' प्रसरण	372.69	2	186.34	0.80	सार्थक नहीं
	न्यादर्थों के 'मध्य' प्रसरण	69488.95	297	233.97		

स्वतंत्रता के अंश = 2.297, 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 3.03, 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 4.68

तालिका में दिए गए परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कह सकते हैं कि विभिन्न श्रेणी के मानसिक मंदित बालक-बालिकाओं की मंदिता की विभिन्न श्रेणी के माताओं के प्रतिबल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

सारिणी 2: मंदित बालिकाओं की माताओं के सामाजिक, आर्थिक स्तर का माताओं के प्रतिबल संबंधी तुलनात्मक परिणाम

सामाजिक-आर्थिक स्तर (रु०)	संख्या	माध्य	मानक विचलन
₹2000	21	40.90	12.68
2001.6000	75	42.04	13.51
6001.10000	43	37.65	18.84
10001₹	11	42.27	12.60

प्रसरण विश्लेषण तालिका

चर	प्रसरण श्रोत	वर्गों का योग	स्वातंत्र्य कोटी	माध्य वर्ग योग	'एफ' का मान	सार्थकता स्तर
माताओं का प्रतिबल	न्यादर्थों के 'अन्तर्गत' प्रसरण	608.03	3	202.68	0.890	सार्थक नहीं
	न्यादर्थों के 'मध्य' प्रसरण	33236.64	146	227.65		

स्वतंत्रता के अंश = 3.146, 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 2.66, 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 3.91

तालिका में दिए गए परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कह सकते हैं कि विभिन्न श्रेणी के मानसिक मंदित बालक की माताओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का माताओं के प्रतिबल पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारिणी 3: बालिकाओं की माताओं के कार्यकारी/अकार्यकारी का माताओं के सामाजिक समायोजन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

कार्यकारी/अकार्यकारी	संख्या	माध्य	मानक विचलन	कांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
कार्यकारी	54	37.91	14.307	1.11	सार्थक नहीं
अकार्यकारी	96	35.24	14.030		

स्वतंत्रता के अंश = 148, 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 1.98, 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान = 2.61

तालिका में दिए गए परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः स्वरूप कह सकते हैं कि विभिन्न श्रेणी के मानसिक मंदित बालक की माताओं के कार्यकारी/अकार्यकारी का आताओं के सहयोजन व्यवहार पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 4. उच्च माध्यमिक स्तर पर सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् किशोर बालक/बालिकाओं के व्यक्तित्व पर कार्यकारी माताओं की भूमिका में तनाव के समायोजन स्तर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

अभियोग्यता	सह-शिक्षण संस्थाओं के किशोर (N ₁ =50)		सह-शिक्षण संस्थाओं किशोरी (N ₂ =50)		Dm	SE _{DM}	C.R.
	Mean	S.D.	Mean	S.D.			
समायोजन क्षमता	58	6.5	54.6	8.5	3.5	1.46	2.33

सार्थकता के 0.05 स्तर पर C.R.dk मान = 1.98

सारणी मान से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर सह-शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् किशोर एवं किशोरियों के समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

निष्कर्ष : माताओं की भूमिका बच्चों को पालने में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं क्योंकि बालक जन्म से किशोरावस्था तक माँ के आँचल

में ही पढ़ता और बढ़ता है। इसलिए उसके आचरण और व्यवहार समाज में समायोजन करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आचरण अच्छा होने से बालक अपने माता-पिता का नाम रोशन करता है और गलत आचरण से उसके माता-पिता की निंदा होती है। इसी बात का तनाव माता-पिता को हमेशा रहता है।

सुझाव

- कामकाजी महिला को तनाव से बचने के लिए अपना दिन सही तरीके पुरु करना चाहिए। आपके ऑफिस और बच्चे के स्कूल का समय एक ही हो तो उसे स्कूल छोड़ते हुए ऑफिस जाएं। सुबह उठने के बाद चाहे आप जितनी भी जल्दी में हो लेकिन एक हेल्दी ब्रेकफास्ट लेने के बाद ही बाकी काम करें। सकारात्मक नजरिया रखें और घबराने की बजाय यह सोचें कि यह रोज का काम है। इससे आपको ऊर्जा मिलेगी और आप एक्टिव होकर अपना काम बेहतर तरीके से करेंगी और तनाव से बच जायेंगी।
- ऑफिस का काम सही तरीके से न हो पाने के कारण भी काम काजी महिलाओं को तनाव होता है। इससे बचने के लिए आप जिस जगह काम करती हैं वहां की आवश्यकताओं को समझें और उसकी के हिसाब से काम करें। अपने बॉस या सुपरवाइजर से अपने काम के बारे में बात करती रहें और उनकी सलाह लेती रहें। एक बात याद रखें कि आप जो भी काम कर रहीं हो उससे आपको संतुष्टि मिलनी चाहिए। यदि आप अपने काम से संतुष्ट हैं तो आपको आत्मविश्वास आएगा और तनाव नहीं होगा।

संदर्भ

- चौधरी, बबिता. "अपने पैक्षणिक कैरियर के संदर्भ में कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों के बीच तनाव का अध्ययन" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च www.educationjournal.org. खण्ड 3; अंक 1; जनवरी 2018, पृष्ठ संख्या 190-193.
- साइमन ओडेय एरिंग, फेलिक्स उडो अकपन और निक्की एम्मा-इचिगू. "मदर्स एम्प्लॉयमेंट डिमांड्स एड चाइल्ड डेवलपमेंट : एन एम्पेरिकल एनालिसिस ऑफ वर्किंग मदर्स इन कैलाबर म्युनिसिपल". समकालीन अनुसंधान के अमेरिकन

इंटरनेशनल जर्नल वॉल्यूम। 4, अप्रैल, 2014 पृष्ठ 184-190.
https://www.aijernet.com/journals/Vol._4_No._4_Ap_tapss-2013/24.pdf.

3. सैयद, अम्बरीन और खान, महमूद. "काम करने वाले और गैर-काम करने वालों के बच्चे - उनकी समायोजन", संचार, वॉल्यूम 25, नंबर 3, 2017: 25:11-20-s